ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

आदिपुराण में असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य का महत्त्व

डॉ. निधि जैन

सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग, एस.एस. जैन सुबोध कालेज, जयपुर।

जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव ने लोगों को असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य का महत्त्व बताया तथा उसे जीविका के अहम् साधन के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके बाद उन्होंने समाज में शान्ति व सुव्यवस्था बनाए रखने हेतु वर्ण व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया। आदिपुराण में भूकर्षण को कृषि कहा है। जमीन को जोतना, बोना कृषि कार्य कहलाता है। कृषि कार्य को एक आवश्यक और उपयोगी जीविका का साधन माना जाता था। जो व्यक्ति कृषि कार्यों को सम्पादित करते थे, वे समाज में आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। कृषि जीवी श्रमिक स्वयं की खेती करने के उपरान्त दूसरों के कृषि कार्यों में भी सहायता प्रदान करते थे। इनके पास हल, बैल और कृषि के औजार रहते थे और बुलाये जाने पर दूसरों के खेत को बो और जोत देते थे। कृषि विद्या के विशारदों की बड़ी प्रतिष्ठा होती थी।

आलोच्य पुराणों में स्थान–स्थान पर कृषि उत्पादनों का भी प्रसंगवश उल्लेख प्राप्त होता है। भूमि को जोतने के लिए जैन सूत्रों में हल, कुलिय व नागल नाम के हलों का उल्लेख मिलता है। किन्तु आलोचित पुराणों में केवल हल[1] का ही उल्लेख मिलता है। खेती मुख्यतः बैलों से की जाती थी। हरिवंशपुराण में 1 करोड़ हल व 3 करोड़ कामधेनु गायों का उल्लेख आया है।

स्वायत्त एवं आत्मनिर्भर ग्रामों की अर्थचेतना मूलतः कृषि उत्पादनों से अनुप्राणित रही थी। आदिपुराण में **"योगक्षेमानुचिन्तनम्"**[2] पद आया है जिसका अर्थ है उपभोग योग्य समस्त वस्तुएँ गाँवों में उपलब्ध हो जाती थी। आलोचित पुराणों के अनुसार भारत की कृषि व्यवस्था उन्नत किस्म की थी। धान के खेतों का वर्णन उन्नत कृषि व्यवस्था को दर्शाता है[3] वर्णन मिलता है – **"सम्पन्नशस्यसुक्षेत्राः प्रसूतयवसोदकाः"**[4] अर्थात् गाँवों में धान के खेत सदा लहलहाते रहते थे। धान के खेतों में उत्पन्न हुए कमलों की सुगन्धि लेने के लिए धान के पौधे उन्नत होकर भी अपनी मंजरी के कारण नीचे झुक रहे थे। प्रसंगानुसार उल्लेख आया है कि धनधान्य से परिपूर्ण पुष्कलावती नाम का देश है। बताया गया है जिस देश में ग्रामों के समीपवर्ती प्रदेश, धान्य के खेतों से घिरे हुए निकटवर्ती प्रदेशों से युक्त पौंडा तथा ईख के खेतों से इतने अधिक सघन रूप से व्याप्त रहते हैं कि उनसे ग्रामों में प्रवेश करना और निकलना कष्ट साध्य होता है। मगध की कृषि संस्कृति के वर्णन के क्रम में आचार्य रविषेण लिखते हैं – मगध देश के खेत हलों की नोक से विदारित स्थलकमलों की जड़ों को इस प्रकार धारण करते हैं, मानों पृथ्वी के श्रेष्ठ गुणों को ही धारण किये हों।

आदिपुराण कालीन भारत के गाँवों में वाटिकाएँ भी सुशोभित हो रही थीं, जिसमें सभी प्रकार के पक्षी कलरव कर रहे थे। फूलों से ढँकी हुई बावड़ियाँ एवं विभिन्न प्रकार की तरकारियों से युक्त समीपवर्ती खेत मन को प्रसन्न कर रहे थे। जहाँ–तहाँ लौकी और तुरई की लताएँ शोभित हो रही थीं। झोपडियों के समीप में फल एवं फूलों से झुकी हुई लताएँ सभी के मन को प्रसन्न कर रही थीं। ग्रामवासियों के यहाँ धृत, दधि, दुग्ध, गुड़, फल आदि पदार्थों की कमी नहीं थी अतः वे महाराज भरत के सम्मुख उक्त पदार्थों की भेंट समर्पित कर रहे थे।

धान के खेतों की पंक्तियाँ लहलहाती थी। गोधूम, अतसी, तिल, जौ के खेत और खलिहानों का वर्णन वरांगचरित में भी आया है। पकी हुई बालों से नम्रीभूत हुए धान के खेत प्रत्येक पथिक का मन अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे। पके हुए धानों के खेतों को काटने में व्यस्त कृषक वर्ग अत्यन्त प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे। कृषकों की मुख मुद्राएँ आर्थिक समृद्धि की ओर संकेत कर रही थीं। खेतों की समृद्धि को देखकर कृषक कन्याओं का मन आनन्द विभोर हो रहा था। अतः वे मनोहर गाना गाकर हंसों को अपनी ओर आकृष्ट कर रही थीं। कृषक कन्याओं का मधुर गायन सुनकर पथिक भी कुछ क्षण के लिए रुक जाते थे। कुछ कृषक बालाएँ अपने कानों में धान की बाल ही धारण किये थीं। पके हुए धानों की सुगन्धि कमल की गन्ध के साथ मिलकर पथिकों के मन को तृप्त कर रही थी। इससे स्पष्ट होता है तत्कालीन भारत की कृषि व्यवस्था समृद्ध थी। कृषक वर्ग सन्तुष्ट एवं प्रसन्न था।

देश प्रतिवर्ष उत्पन्न होने वाले धान्य तथा गोधन से संचित थे। कृषि सम्पदा के लिए अनेक देश तो विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। पंकमय भूमि में धान के अच्छे होने जैसी मान्यताओं का भी उल्लेख प्राप्त होता है। कृषि के लिए समय पर हुई वर्षा अच्छी थी। धान्य वृद्धि के लिए जहाँ सूर्य की गरमी आवश्यक थी वहीं वृक्ष की छाया हानिकारक समझी जाती थी। उपजाऊ भूमि वर्षा के प्रतिबन्ध से रहित शालि, ब्रीहि आदि सभी प्रकार के उत्तमोत्तम धान्यों के समूह से प्रतिवर्ष सफलता को धारण करती थी।

कृषि के क्षेत्र में संयुक्त परिवार की आर्थिक उपयोगिता थी। आज जिस चकबन्दी की व्यवस्था के लिए प्रयास किया जा रहा है वह चकबन्दी संयुक्त परिवार के द्वारा आलोचित पुराणकालीन के भारत में स्वयं ही सम्पादित थी। खेतों के टुकड़े नहीं किये गये थे और न उनका इतना अधिक उपविभाजन ही हुआ था, जिससे कृषि व्यवस्था पर प्रभाव पड़े। एक व्यक्ति की प्रमुखता के कारण अनुशासन के साथ आर्थिक सुरक्षा एवं आर्थिक सबलता भी सम्पादित रहती थी। सदस्यों में पारस्परिक असन्तोष और मनमुटाव न होने के कारण सहकारिता की भावना प्रमुख रूप से रहती थी जिससे कृषि कार्यों में सफलता प्राप्त होती थी।

सन्दर्भ सूची

1. आदिपुराण पृष्ठ संख्या 117 से 121
2 आदिपुराण भूमिका पृष्ठ संख्या 16 से 25
3 आदिपुराण भूमिका पृष्ठ संख्या 12 से 18
4 आदिपुराण पृष्ठ संख्या 136 से 157